पाठ 8. विक्रमादित्य की उपाधि

पाठ का परिचय

रण के मैदान में जहाँ केवल लाशें ही लाशें नज़र आ रही थीं, मगध की सेना का एक सैनिक सुंदरलाल अपने प्रिय स्कंदगुप्त को उन आहतों के बीच में ढूँढ़ रहा था। उसे किसी पुरस्कार का लोभ नहीं था बल्कि वह अपने कर्तव्य का पालन कर रहा था। यह युद्ध कुमार स्कंदगुप्त तथा पुष्पमित्र की सेना के बीच था। शत्रु सैनिक ने स्कंदगुप्त को घायल कर दिया था। वे उन्हें ढूँढ़ते ही रह गए पर रात्रि के उस अँधेरे में सुंदरलाल ने कुमार स्कंदगुप्त को खोज़ ही निकाला। सुंदरलाल के प्रयत्नों से ही स्कंदगुप्त को नया जीवन प्राप्त हुआ। कुमार स्कंदगुप्त सुंदरलाल की कृतज्ञता से बँध गए। कई वर्षों के पश्चात कुमार स्कंदगुप्त मगध के सिंहासन पर बैठे। उन्होंने सुंदरलाल को सेनापति के पद पर प्रतिष्ठित किया। एक समय आया जब मगध पर हूणों का आक्रमण हुआ। स्कंदगुप्त के सामने यह प्रश्न था कि वे हूणों के दमन के लिए किसे भेजें। तब स्कंदगुप्त ने यह भार आँसू भरी आँखों से सुंदरलाल को सौंप दिया। सुंदरलाल उज्जयिनी में एक प्रतिनिधि नहीं बल्कि सेवक के रूप में रहने लगे। उज्जयिनी उनके संरक्षण में धन-धान्य से भरने लगी। तभी हूण सरदार ने उज्जयिनी पर आक्रमण कर दिया। उसी समय एक गुप्तचर को पकड़कर उससे एक पत्र प्राप्त किया गया जिसमें स्कंदगुप्त को मारने की बात लिखी थी और यह भी बताया जा रहा था कि यह साज़िश सुंदरलाल की है। स्कंदगुप्त को पूर्ण विश्वास था कि सुंदरलाल ऐसा नहीं लिख सकते। उसी समय दूत यह खबर लाया कि सेनापति सुंदरलाल ने हूणों से युद्ध करते हुए प्राण विसर्जन कर दिए। सम्राट पीड़ा से व्यथित हो उठे। उसके कानों में सुंदरलाल की पुरानी आवाज़ गूँज उठी – आप विक्रमादित्य की उपाधि अवश्य धारण करें। स्कंदगुप्त ने उसी समय हूणों से युद्ध करने की ठान ली और उन्हें परास्त करके भारत की विजय पताका फहराई। वह विक्रमादित्य बन गए लेकिन सुंदरलाल को यादकर उनकी आँखें भर आईं।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

यदि कोई हम पर किसी तरह का एहसान करे तो हमें उसके एहसान को भूलना नहीं चाहिए। स्वार्थरहित त्याग की भावना रखने वाले लोग महान होते हैं। ऐसे लोगों का साथ यदि हमें मिल जाए तो हमें अपने-आप को धन्य समझना चाहिए।

पाठ का वाचन

पूरे पाठ का वाचन हाव-भाव सहित करें। प्रत्येक पंक्ति को पढ़कर समझाते हुए आगे बढ़ें। पाठ समाप्त कर पूरे पाठ पर अपनी टिप्पणी दें। बच्चों से पाठ का एक बार फिर मौन वाचन करने को कहें। बच्चों से जानें कि उन्हें इस पाठ में क्या अच्छा लगा। बच्चों को जो न समझ में आया उसे एक बार फिर समझाएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा बच्चों के साथ करें –

- सुंदरलाल के चरित्र के बारे में तुम क्या कहना चाहोगे?
- सुंदरलाल की तरह अपने मालिक की रक्षा करने वाले व्यक्ति को तुम क्या कहोगे?
- क्या सुंदरलाल की तरह तुम भी राजकाज सँभालने का प्रस्ताव ठुकरा सकते हो?
- किसी ऐसे कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति के बारे में बताओ जिसने तुम्हें प्रभावित किया हो।